॥ सर्वभूतहिते रताः ॥

भारत साधु समाज

अखिल भारतीय महा अधिवेशन
के अवसर पर

महामंत्री
श्री स्वामी हरिनारायणानंदजी
का
प्रतिवेदन अभिभाषण

८ मार्च १९८१
स्वामिनारायण नगर, अहमदाबाद.

भारत साधु समाज
२२, सरदारपटेल रोड, नई दिल्ली ११००२१

भारत साधु समाज

साधु शक्ति का महान् प्रयोग

आदरणीय धर्माचार्यवृन्द, महात्माओं तथा सज्जनों !

भारत की शीर्षस्थ एवं मानवीय मूल्यों की रक्षा तथा कर्तव्यबोधन की भूमि गुजरात में आयोजित भारत साधु समाज के अखिल भारतीय महा अधिवेशन के अवसर पर आप विशिष्ट धर्माचार्यों एवं सम्माननीय महानुभावों के समक्ष समाज के पिछले वर्षों के कार्य-कलापों को प्रस्तुत करते हुए हमें प्रसन्नता हो रही है। भारत वर्ष का प्रत्येक भाग धर्म एवं संस्कृति के महान तीर्थस्थलों के भारत नागरिकों के लिये आत्मिक एवं शौर्य प्रेरणा का संत बना हुआ है, जिसमें गुजरात भूमि का विशेष महत्त्व है। क्योंकि अन्याय तथा अत्याचार के निवारण के लिये भगवान कृष्ण ने द्वारिका की भूमि से ही योजना बनाकर सत्य तथा धर्म की रक्षा के लिये अपने आप को समर्पित किया था। स्वामिनारायण सम्प्रदाय के प्रवर्तक प्रातः स्मरणीय स्वामी सहजानंद ने आज से दो सौ वर्ष पूर्व इस क्षेत्र को अपना कार्यक्षेत्र बनाकर सामाजिक कुप्रथा, अंधविश्वास तथा पाखंड को हटाकर धर्म के मूल आदर्शों की रक्षा के लिये स्वामिनारायण सम्प्रदाय की स्थापना कर लाखों-करोड़ों व्यक्तियों के जीवन में भक्ति, ज्ञान तथा कर्तव्यपालन का उद्बोधन किया था। जिनकी द्विशताब्दी के अवसर पर हम सब आज यहां राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा स्थापित साबरमती आश्रम की पवित्र तीर्थ स्थली पर इस अधिवेशन का शुभारम्भ कर रहें हैं !

२. यह भूमि त्याग एवं बलिदान की प्रेरणा देती है, जहां से कौपिनधारी महात्मा गांधी ने भारत के लोगों को स्वराज्य प्राप्ति के निमित्त अहिंसक आन्दोलन चलाने का संदेश दिया, और समाज के उपेक्षित वर्ग को भी सम्मान देने तथा उनकी उपयोगिता के महत्त्व को उजागर किया। गुजरात की भूमि हमें जहां कृष्ण की याद दिलाती है, वहां ही अकिंचन मित्र सुदामा, परम भक्त नरसी तथा सोमनाथ एवं डाकोर की आध्यात्मिक गरिमा का परिचय कराती है। अहमदाबाद नगर भी प्राचीन समय से ही धार्मिक

सहिष्णुता तथा नैतिक विकास का शीर्षस्थ नगर बना हुआ है। इस महानगरी में भारत साधु समाज का दूसरी बार महा अधिवेशन हो रहा है। पहला अधिवेशन १९५९ में हुआ था जिसका उद्घाटन भारतीय धर्म एवं संस्कृति के महान् उपासक राष्ट्रपति दिवंगत डा. राजेन्द्र प्रसाद ने किया था। भारत साधु समाज की स्थापना एवं संगठन को क्रियाशील बनाने में भारतीय दर्शन तथा संस्कृति के जिन महान् धर्माचार्यों का हमें तन, मन, धन से आशीर्वाद प्राप्त हुआ था वे विभूतियां शारीरिक रूप में तो आज उपलब्ध नहीं हैं परन्तु उनकी शुभ कामनायें हमें आज भी प्रेरणा दे रही हैं। पंडितराज स्वामी भागवताचार्यजी महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी भगवतानंदजी महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी विद्यानन्दजी महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी कृष्णानंदजी महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी सेवादासजी महाराज तथा स्वामिनारायण मंदिर मणीनगर के संस्थापक श्रीस्वामी मुक्तजीवनदासजी महाराज के नामों को हम बार बार स्मरण करते हैं जिन्होंने गुजरात राज्य को अपना कार्यक्षेत्र बनाकर सारे भारत को आत्मज्ञान तथा समाजसेवा की शिक्षा प्रदान की थी। ये सभी महापुरुष भारत साधु समाज के स्तम्भ के रूप में हमें प्राप्त थे।

३. समाज का पिछला महाअधिवेशन तीर्थराज प्रयाग में गत जनवरी १९७७ में कुंभ पर्व के शुभ अवसर पर हुआ था जिसका उद्घाटन ज्योतिष्पीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य श्रीस्वामी शान्तानंद सरस्वती ने किया था। निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज, ब्रह्मलीन महामंडलेश्वर श्रीस्वामी सदानंद गिरि तथा वयोवृद्ध एवं ज्ञानवृद्ध महामंडलेश्वर श्री स्वामी भजनानंद सरस्वती, विश्व प्रसिद्ध महर्षि शुद्धानन्द भारती, प्रसिद्ध वैष्णव महात्मा रामायणी प्रेमदासजी तथा अन्य विशिष्ट मंडलेश्वरों तथा अखाड़ों के मठाधीशोंने भाग लेकर साधु समाज संगठन को शक्ति प्रदान किया था। प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधीने मुख्य अतिथि के रूप में अधिवेशन में भाग लिया था और साधु महात्माओं से अनुरोध किया था कि वे देश के सामाजिक एवं आर्थिक विकास के कार्यों में तथा नैतिक उत्थान के लिये अपनी शक्ति तथा साधन का उपयोग करने की कृपा करें जिससे समृद्ध भारत का निर्माण हो सके। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल डा. सी. चेन्नारेड्डी, मुख्यमंत्री श्री नारायण दत्त तिवारीने भी भाग

लिया था। महा अधिवेशन में धार्मिक संस्थानों का संरक्षण, धर्मस्थानों को भूमिहदबंदी कानून के प्रतिबंध से मुक्ति, सदाचार निर्माण एवं आध्यात्मिक विकास, गोरक्षा तथा राष्ट्रीय एकता संबंधी प्रस्तावों एवं कार्यक्रमों के अतिरिक्त आर्थिक विकास एवं समाज कल्याण तथा २० सूत्री आर्थिक कार्यक्रमों में जनता के योगदान का भी आह्वान किया गया था। दो हजार साधु सन्तों ने इस महत्त्वपूर्ण सम्मेलन में भाग लिया था जिसकी अध्यक्षता ब्रह्मलीन स्वामी गुरुचरणदासजी ने की थी। महासमिति ने सर्व सम्मति से उन्हें अध्यक्ष तथा स्वामी हरिनारायणानन्द को महामंत्री निर्वाचित करने का प्रस्ताव भी स्वीकार किया था। दुर्भाग्यवश स्वामी गुरुचरणदासजी महाराजका गत १९७९ में देहान्त हो गया। वे एक महान सन्त महापुरुष थे जिनका सम्पूर्ण जीवन जनता जर्नादन की सेवा के लिये अर्पित था।

४. तीर्थराज प्रयाग में सम्पन्न हुए पिछले अधिवेशन के बाद गत वर्ष १९८० में भारत साधु समाज का विशेष अधिवेशन अद्र्ध कुंभ के अवसर पर हरिद्वार में महामंडलेश्वर श्री स्वामी वेद व्यासानंद सरस्वती के गीता प्रचार पंडाल में सम्पन्न हुआ जिसमें केन्द्रीय परिवहन एवं जहाजरानी मंत्री श्री अनन्त प्रसाद शर्मा ने भी भाग लिया। महामंडलेश्वर स्वामी भजनानन्द सरस्वती जी ने उद्घाटन किया और भारत साधु समाज के कार्यकारी अध्यक्ष महामंडलेश्वर श्री स्वामी रामस्वरूप शास्त्रीजी ने अध्यक्षता की। श्री स्वामी श्यामसुन्दरदासजी गरीबदासी आश्रम, श्री महन्त व्रजकिशोर पुरी जी निरंजनी अखाड़ा, श्री महन्त गोपालदासजी उदासीन पंचायती अखाड़ा, श्री स्वामी धर्मानन्द सरस्वती अध्यक्ष परमार्थ आश्रम, श्री महन्त गिरिधरनारायणपुरी महानिर्वाणी अखाड़ा, श्रीमहन्त सुच्चा सिंहजी श्री महन्त निर्मल अखाड़ा, मंडलेश्वर ब्रह्मदासजी प्रमुख महापुरुषों ने अपना पूर्ण योगदान दिया। तीन दिनों के इस सम्मेलन में विभिन्न प्रश्नों पर विचार किया गया।

इसी वर्ष उज्जैन के कुंभ मेले के अवसर पर भी अप्रेल १९८० में दो दिनों का विशेष अधिवेशन आयोजित किया गया जिसका उद्घाटन रामानंद सम्प्रदाय के जगद्गुरु रामानंदाचार्य जी ने किया और श्रीमहन्त व्रजकिशोरपुरी, रामायणी प्रेम दासजी, श्रीमहन्त ओंकारपुरी जी, श्रीब्रह्मचारी गोपालानन्दजी, श्रीमहन्त रामलखनदासजी आदि महात्माओं का

योगदान महत्त्व पूर्ण रहा । दूसरें दिन का अधिवेशन महामंडलेश्वर श्री स्वामी मंगलानंद गिरिजी तथा अग्नि अखाड़ा के आचार्य मंडलेश्वर ब्रह्मर्षि प्रकाशानंदजी के सानिध्य में सम्पन्न हुआ जिसमें हजारों साधुओं ने भाग लिया । दो स्थानों के अधिवेशनों का आयोजन समाज के महामंत्री श्री स्वामी हरिनारायणनन्दजी के मार्ग दर्शन में सम्पन्न हुआ । जिसमें योगिराज सूर्यदेव तथा ब्रह्मचारी रामचन्द्रजी का योगदान प्रशंसनीय रहा है । श्रीरामचन्द्रजी ने सभी धर्मस्थानों तथा आश्रमों में भ्रमण कर प्रचार तथा संगठन कार्य का सम्पादन संतोषजनक ढंग से सम्पन्न किया था । उज्जैन के अधिवेशन में निर्मल सम्प्रदाय के पं० गुरुदीप सिंह तथा वैष्णवमार्तण्ड स्वामी दाशरथिदासजी का महत्त्व पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ । इन सभी अधिवेशनों का समाचार आकाशवाणी तथा समाचार पत्रों में प्रसारित एंव प्रकाशित हुआ था । गुरुकुल कांगड़ी आयुर्वैदिक कालेज के प्रिन्सिपल पं० सुरेश शास्त्री ने भी उज्जैन कुंभ के आयोजन में बड़ा परिश्रम दिखलाया ।

इसके पूर्व बिहार प्रदेश भारत साधु समाज का तीन दिनों का अधिवेशन बक्सर में सम्पन्न हुआ था जिसमें वाराणसी के महान विद्वान श्री स्वामी योगीन्द्रानन्दजी, स्वामी केशवपुरी तथा नाथ सम्प्रदाय के आचार्य मठाधिपति श्री महन्त अवैद्यनाथजी ने भी भाग लिया था । इसके पूर्व मुजफ्फरपुर (बिहार) में प्रदेश भारत साधु समाज का तीन दिनों का अधिवेशन वर्ष १६७८ में सम्पन्न हुआ था जिसका उद्घाटन बिहार के तत्कालीन राज्यपाल श्री जगन्नाथ कौशल ने किया था । श्री श्रिया मठ के महन्त श्री मकसूदनदासजी ने स्वागताध्यक्ष के रूप में अपना पूर्ण योगदान प्रदान किया । सर्वोदय नेता दिवगंत श्री जयप्रकाश नारायणजी ने भी सम्मेलन को अपना शुभ सन्देश धार्मिक जीवन एवं धर्मस्थानों के संरक्षण पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश डाला था । उन्होंने अपने सन्देश में कहा था कि सार्वजनिक कार्यों तथा धार्मिक कृत्यों के वहन के लिए प्रत्येक धार्मिक स्थान को उतनी जमीन भूमिहदबन्दी कानून में छोड़ देनी चाहिए जितनी कि आवश्यकता हो ।

साधु समाज संगठन को विभिन्न क्षेत्रों में क्रियाशील बनाने के सम्बन्ध में कार्यवाही की गई । समाज ने अपने एकादश सूत्री कार्यक्रमों में निम्नांकित ५ सूत्री कार्यक्रमों को तात्कालिक कार्यक्रम के रूप में लिया ।

(१) आध्यात्मिक विकास एवं सदाचार निर्माण।
(२) राष्ट्रीय एकता एवं साम्प्रदायिक सद्भाव का प्रसार।
(३) साधु मर्यादा एवं धर्मस्थानों का संरक्षण।
(४) नैतिक शिक्षा एवं संस्कृति-निष्ठा।
(५) गोसेवा एवं अहिंसा भावना का प्रसार।

शिक्षण संस्थाओं में बालक बालिकाओं के बीच नैतिक गुणों के विकास के लिए प्रार्थना की योजना बिहार के अनेक विद्यालयों में कार्यान्वित की गई। इसी तरह दिल्ली प्रदेश में साधु समाज संगठन की शाखा का पुनर्गठन महामंडलेश्वर स्वामी गणेशानन्दजी की अध्यक्षता में किया गया। झंडेवाला मन्दिर के प्रधानपंडित योगेश्वर आत्रेय को सलाहकार समिति का संयोजक मनोनीत किया गया। शाखाने दिल्ली के विद्यालयों में नैतिक शिक्षा के कार्यक्रम को चलाने के लिए एक योजना बनाई है।

आलोच्य अवधि में अनेक कठिनाइयों के बावजूद केन्द्रीय कार्यालय ने राष्ट्र के नेताओं तथा राज्य सरकारों के साथ धार्मिक संस्थाओं के संरक्षण के लिए सम्पर्क स्थापित किया। साधु समाज को इस बात से विशेष चिन्ता है कि देश के पर्वतीय तथा आदिवासी क्षेत्रों में प्रलोभन तथा आर्थिक सहायता के नाम पर धर्म परिवर्तन कराया जा रहा है। लालच या दबाव देकर किसी प्रकार का धर्म परिवर्तन का प्रयत्न धर्म के प्रवर्तकों के मूल आदर्शों के सर्वथा विपरीत है।

हमने कार्यक्रमो के संबंध में समाज के महामंत्री द्वारा हरिद्वार, ऋषिकेश, राजस्थान, बंगलोर, मद्रास, उज्जैन, वाराणसी तथा बिहार के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा किया गया। महामन्त्री ने राष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री तथा राज्य के मुख्य मन्त्रियों से समय-समय पर मिलकर देश की महत्त्वपूर्ण समस्याओं तथा साधु समाज के कार्यक्रमों के संदर्भ में भारत साधु समाज की नीति के अनुसार ध्यान आकृष्ट किया और समय-समय पर समाचार पत्रों एवं आकाशवाणी से वक्तव्यों का प्रसारण किया गया। संयोग वश १९७७ लोक सभा के सामान्य चुनाव में श्रीमती इन्दिरा गांधी की पराजय हो जाने के कारण देश के राजनैतिक एवं सामाजिक वातावरण में शासकीय नीति में परिवर्तन आया परन्तु साधु समाज के कार्यक्रमों में किसी प्रकार की कठिनाई उत्पन्न नहीं हुई।

हम इस बात को नहीं भूल सकते कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा १९७६ में प्रस्तावित धर्मादा नियन्त्रण आदेश को रद करने में प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की पूरी सहानुभूति रही और साधु समाज की मांग को स्वीकार कर लिया गया। भारत के धर्मस्थानों पर दूसरा बड़ा संकट भूमिहदबन्दी कानून के कारण १९७०-७१ में आ गया था। उसे भी इन्हों ने दूर करने में दिलचस्पी दिखाई और भारत साधु समाज के शिष्ट मण्डल के अनुरोध पर राज्यों को निर्देश दे दिया गया कि वह स्वेच्छया सार्वजनिक प्रकार के धार्मिक संस्थाओं की स्वयं की जाने वाली खेती की जमीन की छूट दे सकती हैं। फलस्वरूप हमारे प्रयत्न से देश के उत्तर प्रदेश, मध्य-प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उड़ीसा आदि धर्मस्थान बहुल राज्यों में पूरी छूट दे दी गयी परन्तु खेद की बात है कि बिहार, गुजरात तथा कर्नाटक की सरकारों ने छूट प्रदान नहीं की। बिहार में केवल दो इकाई तथा मैसूर में दो इकाई की आंशिक छूट तो दी गई परन्तु गुजरात में यह छूट भी नहीं दी गई। पिछले जनता पार्टी के शासन काल में भी यही क्रम जारी रहा। साधु समाज ने पिछले शासन काल में भी इस संबन्ध में जोरदार मांग की थी।

भारत साधु समाज यह आवश्यक मानता है कि बिहार, गुजरात तथा कर्नाटक राज्य में कम से कम एक सौ एकड़ सिंचित जमीन की छूट प्रत्येक मठ-मन्दिर, आश्रम को प्रदान की जाय। क्यों कि धर्म स्थानों के साथ लगी जमीन किसी व्यक्ति विशेष की नहीं होकर सामूहिक कल्याण के लिये अर्पित है। जिससे साधुओं, गरीबों एवं असहाय लोगों का भरण पोषण होता है। हदबंदी तो व्यक्तिगत सम्पत्तिकी होती है न कि सार्वजनिक संस्थाओं की। इस संबन्ध में भारत साधु समाज द्वारा संबद्ध राज्यों के मुख्य मन्त्रियों से सम्पर्क किया गया है। बिहार में विगत वर्ष १९७७ के मई माह में मुख्यमन्त्री डा. जगन्नाथ मिश्र द्वारा प्रत्येक धर्मस्थान को कम से कम तीन इकाई कृषि जमीन की छूट देने का अध्यादेश प्रस्तावित किया गया था। इस के अतिरिक्त प्रत्येक धर्म स्थान के भवन तथा सहन के लिए पांच एकड़ तथा बागीचे के लिए १० एकड़ जमीन छोड़ने का भी प्रस्ताव साधु समाज की मांग के अनुसार किया गया था परन्तु वह जनता शासन काल आ जाने के बाद कार्यान्वित नहीं हो पाया। हालाँ कि तत्कालीन मुख्य-मन्त्री श्री कर्पूरी ठाकुर ने विचार करने का आश्वासन दिया था। अब पुनः

डा. मिश्र के मुख्य- मन्त्री होने के बाद भूमिहदबन्दी कानून में उपरोक्त संशोधन के लिए हमने अनुरोध किया है और प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी का भी हमने मिलकर ध्यान आकृष्ट किया है।

इसी तरह की समस्या गुजरात राज्य की है। गुजरात धर्मस्थान बहुल राज्य है। जनता में धार्मिक संस्कार है। एतदर्थ गुजरात सरकार से भी साधु समाज की अपेक्षा है कि वह धर्मस्थानों के मामलों में राजस्थान, पंजाब, हरियाणा तथा उत्तर प्रदेश सरकारों का अनुसरण करें जिसने सार्वजनिक प्रकार के सभी धर्मस्थानों को स्वयं हल, बैल या ट्रेक्टर से की जाने वाली खेती को हदबंदी से मुक्त कर दिया है।

धर्मस्थानों पर संकट

दूसरी समस्या धार्मिक स्थानों के विकास की है। राज्य तथा केन्द्र सरकारों द्वारा बननेवाले नित्य नये नये कानूनों की व्यवस्था से परेशानी बढ़ गई है। बिहार राज्य में तो दो सौ रुपये मासिक आमदनी वाले धर्मस्थानों पर भी धार्मिक ट्रस्टबोर्ड का टैक्स लगता है। जब कि भारत सरकार ने १५ हजार वार्षिक आमदनीवालों को आयकर से मुक्त कर दिया है। आयकर कानून के वर्तमान प्रावधान के अनुसार धर्मस्थानों को भी अपना वार्षिक विवरण फार्म देना है। यह एक अनावश्यक परेशानी में डालनेवाला नियम है। धार्मिक कार्यो के लिये दी जाने वाली १० हजार रुपये से अधिक राशि पर भी दानदाता को आयकर देना होता है जब कि राजनैतिक दलों को चन्दा देने पर आयकर की संभवतः छूट है। यह कैसी विडम्वना है?

साधु समाज यह न्यायसंगत मानता है कि सार्वजनिक प्रकार के मठ-मंदिर तथा आश्रम को दी जाने वाली एक लाख रुपये तक की छूट वर्ष में प्रत्येक दानदाता को प्रदान किया जाय। जब धर्म निरपेक्ष सरकार किसी देवस्थल के निर्माण या रखरखाव के लिये स्वयं अनुदान नहीं दे सकती है तब श्रद्धालु जनता द्वारा दिये जाने वाले दान की राशि पर आयकर लगाने का क्या औचित्य हो सकता है?

तीसरा संकट धर्मस्थानों के सामने यह है कि इसकी सामान्य व्यवस्था में शासन का हस्ताक्षेप बहुत बढ़ जाता है। इसके साथ घूस रिश्वत तथा भ्रष्टाचार की शिकायतें भी मिलती रही है। गुजरात के अनेक साधु धर्मस्थानों पर धर्मस्थान के सम्प्रदाय के परम्परा के विरुद्ध चैरीटी कमिश्नर ने गृहवासियों की प्रबंध समिति वना दी है और मठाधीश का महत्त्व तथा प्रतिष्ठा और वर्चस्व को कम कर दिया गया है। निःसन्देह यह स्थिति धर्मस्थानों के लिये अनुचित है।

चौथा संकट धर्म स्थानों के लिये स्वयं वे मठाधीश बनते जा रहे हैं जो सम्प्रदाय के परम्परा के विरुद्ध विरक्त जीवन से अलग होकर पारिवारिक जीवन बिता रहे हैं। साधु समाज की यह स्पष्ट मान्यता है कि जिन साधु सम्प्रदायों में प्राचीन काल से विरक्त साधु शिष्य ही मठ, आश्रम, या मंदिर का महन्त होता आया है उस पर कोई महन्त या मठाधीश पारिवारिक एवं वैवाहिक जीवन नहीं बिता सकता। उसे गद्दी से हटा देना चाहिये। इसके लिये आवश्यक हो तो भारत सरकार द्वारा गठित सर सी. पी. रामा स्वामी ऐय्यर के हिन्दू धर्मत्व आयोग के अनुशंसा के अनुसार कारवाई की जानी चाहिये। कोई भी स्वाभिमानी साधु सन्यासी पारिवारिक एवं वैवाहिक के मठाधिपति के नीचे नतमष्तक नहीं हो सकता है। साधु सम्प्रदाय का आचार्य या मठाधीश गृहस्थ को मानना संभव नहीं है।

यह खेद की बात है कि देश के अनेक मठों के मठाधीशों ने साधु मर्यादा का अतिक्रमण कर पिछले दशक में विवाह कर लिया है। और धर्मस्थान की सम्पत्ति को परिवार की सम्पत्ति जैसा व्यवहार कर रहे हैं। ऐसी स्थिति पर तुरत नियंत्रण होना चाहिये और साधु वर्ग को एकजूट होकर इसका प्रतिकार कर देना चाहिये।

साधु समाज ने यह आवश्यक माना है कि जिन राज्यो में धार्मिक ट्रस्ट या चैरिटी एक्ट लागू है वहां साधु संस्थाओं के लिये नियमन तथा मार्गदर्शन के लिये साधु समाज की धर्मादा कमिटी राज्य तथा क्षेत्रीय स्तर पर बननी चाहिये। धर्मादा अधिकारी साधु सम्पत्ति के नियंत्रण एवं मार्गदर्शन में ही काम करें जिससे धार्मिक संस्थाओं के कृत्यों में सरकारी हस्ता-

क्षेप को रोका जा सके। हमारे धर्मस्थान व्यवसाय का क्षेत्र नहीं हो सकते। इसे तो धर्म तथा अध्यात्म एवं समाज सेवा का प्रेरणा केन्द्र ही बना रहता है। जहां कहीं त्रुटियाँ आ गयी हैं उनका संशोधन करना है।

साधु समाज ने देश तथा विदेश के विभिन्न भागों में श्रद्धालु जनता की भगवद्भक्ति-भावना का दुरुपयोग करनेवाले स्वयंभू भगवानों से भी जनता को सावधान करने का निश्चय किया था। क्यों कि अनेक ऐसे व्यक्ति आज अपने आप को भगवान घोषित कर लाखों करोड़ों की सम्पत्ति अर्जित कर रहे हैं जिनके जीवन में न संयम दीखता है और न सादगी। ऐसे लोग भगवान नाम का उपहास कर रहे हैं जिससे भारतीय जनता की तथा विदेशी नागरिकों को भी सावधान कर देना साधु समाज अपना कर्तव्य मानता है।

साधु उपदेशक मंडल

भारत साधु समाज द्वारा निर्धारित पांच तात्कालिक कार्यक्रमों के कार्यान्वयन की दृष्टि से यह आवश्यक समझा गया है कि भारतीय धर्म एवं संस्कृति के आदर्शों के अनुकूल सामान्य लोगों के आचार विचार एवं कर्तव्य भावना को उन्नत बनाने के लिये साधुओं का उपदेशक मंडल बनाया जाय जो ग्रामीण क्षेत्रों तथा मुख्यतः गिरिजनों के बीच जाकर गीता, रामायण तथा सन्तों की वाणियों का प्रचार प्रसार कर सके। इसकी विस्तृत योजना बनायी जा रही है। ऐसे कार्यक्रमों के प्रशिक्षण के लिये ऋषिकेश (हिमालय) में स्थित भारत साधु समाज आध्यात्मिक योगाश्रम को केन्द्र बनाने का विचार है। यहां समाज सेवा एवं समाज शिक्षा तथा योग शिक्षा प्रचार के लिये साधुओं एवं कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण केन्द्र बनाया जा रहा है। अभी साधु समाज के इस आश्रम में २१ कमरे आवास के लाये उपलब्ध हैं जिनके निर्माण में ब्रह्मलीन महामंडलेश्वर श्री स्वामी शुकदेवानन्द ट्रस्ट परमार्थ निकेतन का योगदान महत्त्वपूर्ण एवं सराहनीय है।

लगभग तीन एकड़ की भूमि में बन रहा यह आश्रम गंगा तट की गंगा धारा से हमें आन्तरिक सुख उपलब्ध करा रहा है। इस आश्रम में

अभी देव मंदिर तथा प्रार्थना हाल एवं साधु प्रशिक्षण तथा निवास कक्ष बनाने का निश्चय किया गया है जिसमें लगभग पांच लाख रूपये की प्रारंभिक आवश्यकता होगी । यह आध्यमिक उपासना तथा समाज सेवा अनुसंधान केन्द्र का भी काम करेगा ।

संक्षेप में हमने भारत साधु समाज के विभिन्न कार्यक्रम तथा प्रवृत्तियों का उल्लेख किया है और साथ ही साथ देश एवं समाज की वर्तमान स्थिति में साधु समाज द्वारा जनता के सामूहिक कल्याण के लिये क्या कुछ किया जा सकता है और किया गया है, इसकी संक्षिप्त चर्चा हुई है (साधु समाज भारतीय भूमि में उत्पन्न हुए सभी धर्मों के साधुओं की एक मात्र प्रतिनिधित्व मूलक अखिल भारतीय संगठन है जो साधु शक्ति को देश के नवनिर्माण तथा मानव कल्याण के कार्यों में लगाने का प्रयास कर रहा है । देश के दशनामी सन्यासी, निम्बार्की रामानन्दी, उदासी, कबीर पंथी, लिंगायत, मध्व, चार सम्प्रदाय, स्वामिनारायण, दादू पंथी, राम स्नेही, नाथ योगी, गरीब दासी, निर्मला, आदि सम्प्रदायों के आचार्य, मंडलेश्वर एवं मठाधीश तथा सामान्य साधु इस संगठन के सदस्य तथा मार्गदर्शक हैं । सन्यासी, उदासीन, वैष्णव, तथा निर्मल अखाड़ो का भी इसमें पूर्ण प्रतिनिधित्व प्राप्त है । यह अत्यन्त प्रसन्नता तथा गौरव का विषय है कि एकमंच पर हम सभी एकत्र होकर अपनी शक्ति एवं साधन को जनता जनार्दन की आध्यात्मिक तथा भौतिक उन्नति के लिये प्रतिबद्ध हुए हैं ।

मैं अन्त में साधु समाज की ओर से श्री १००८ स्वामी नारायणस्वरूप दासजी के प्रति जो प्रमुख स्वामी के रूपमें देश विदेश में प्रसिद्ध हैं आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने भारत साधु समाज के महाधिवेशन का स्वागताध्यक्ष के रूप में उत्तम तथा आवश्यक प्रबंध किया है । साधु समाज महाधिवेशन की व्यवस्था का विशाल आयोजन पूज्य प्रमुख स्वामीजी के श्रद्धावान एवं निष्ठवान कर्तव्य शील सन्तों एवं भक्तों की योग्यता तथा कर्मठता का भी परिचायक है जिनका भारत का साधु समाज तथा सरकारी शासन तंत्र भी अनुकरण कर सकता है । अधिवेशन पंडाल तथा स्वामिनारायण के संतों की श्रद्धा एवं उत्साह को प्रकट कर रही है जिन्होनें मान अपमान से मुक्त रहकर स्वान्तः सुखाय वृत्ति का मार्ग प्रशस्त किया है जिससे निःस्वार्थ समाजसेवा की वह भावना व्यक्त होती है जिसकी शिक्षा भगवान स्वामि-

नारायण महाराजने प्रदान की थी । मेरा पूर्ण विश्वास है भविष्य में भी भारत साधु समाज को हर प्रकार का सहयोग एवं योगदान पूज्य प्रमुख स्वामीजी तथा उनके निष्ठावान अनुयायियों का मिलता रहेगा जिन्होंने संयम तथा सदाचार के प्रतीक के रूप में रहकर भारतीय धर्म एवं संस्कृति के आदर्शों के प्रचार प्रसार में अपने साथ सैकड़ों सन्तों एवं लखों भक्तों को लगाया है । निःसन्देह यह कार्य युगमहापुरुष ब्रह्मलीन शास्त्रीजी महाराज एवं योगीजी महाराज की आत्मा को संतोष एवं शान्ति प्रदान करती रहेगी जिन्होंने स्वामिनारायण सम्प्रदाय में इस के प्रवर्तक आचार्य स्वामी सहजानन्दजी महाराज के शिक्षा एवं आदर्शों के अनुरूप विरक्त साधु सन्तों की मर्यादा की रक्षा की, और वैदिक काल के निवृत्ति मार्ग की श्रेष्ठ व्यवस्था को इस समाज में सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्रदान कर साधु समाज के मान को बढ़ाया और गौरव प्रदान किया था ।

मैं पुनः भारत के कोने कोने से पधारे धर्माचार्यों मंडलेश्वरों, साधु सन्तों के प्रति अपना सम्मान श्रद्धा, भक्ति एवं सेवा अर्पित करता हूँ जिन्होने अनेकों कष्ट झेलकर इस महा अधिवेशन में अपना दर्शन देकर साधु समाज के राष्ट्रीय संगठन को अपने आशीर्वाद एवं योगदान से सुदृढ़ बनाया है और एक जूट होकर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में अपनी शक्ति एवं साधन को लगाने का निश्चय किया है । आप सभी ने हमारे आमंत्रण पर स्वामिनारायण नगर में पधारकर जो अनुकम्पा कृपा एवं राष्ट्र के प्रति तत्परता दिखायी है उसके लिये हम सदा आभारी हैं अपनी त्रुटियों के लिये क्षमा याचना करता हुआ शत शत पादः स्पर्श करता हूं ।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं, पूर्णात्पूर्ण मुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्णमेवावशिष्यते ॥

८ मार्च १९८१

म. स्वामी हरिनारायणानन्द
स्वामिनारायण नगर, अहमदाबाद.